स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग

राँची विश्वविद्यालय, राँची

मानविकी संकाय के अन्तर्गत

संस्कृत विषय में पीएच० डी० शोधोपाधि हेतु प्रस्तावित

शोध-प्रारूप

“अभिराज राजेंद्र मिश्र के महाकाव्यों में प्रयुक्त कृत् एवं तद्धित प्रत्ययों का समीक्षात्मक अध्ययन”

शोध-निर्देशिका

प्रो० अर्चना कुमारी दुबे

स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग

राँची विश्वविद्यालय, राँची

शोधच्छात्रा

यशिका

संस्कृत विभाग

राँची विश्वविद्यालय, राँची

"अभिराज राजेंद्र मिश्र के महाकाव्यों में प्रयुक्त कृत् एवं तद्धित प्रत्ययों का समीक्षात्मक अध्ययन "

<u>प्रस्तावना</u>

मनुष्यमात्र की यह स्वाभाविक प्रवृत्ति है कि वह अपने सुख-समृद्धि के लिए अत्यन्त सरलतम उपायों को करने की कोशिश करता है। विभिन्न प्रकार के योग, तप आदि को छोड़कर वह काव्य की ओर उन्मुख होता है। काव्यामृत का पान करते हुए मनुष्य मात्र परम आनन्द का अनुभव करते हैं, क्योंकि काव्य ही एकमात्र वह साथन है जो धर्माभिलाषुकों को धर्म, अर्थार्थियों को अर्थ, कामार्थियों को काम एवं मोक्ष-सुख चाहने वालों को सुख की प्राप्ति करवाता है। काव्य ही विभिन्न कलाओं में वैचक्षण्य, प्रीति एवं यश को प्राप्त करवाता है-

धर्मार्थकाममोक्षेषु वैचक्षण्यं कलासु च।

करोति कीर्तिं प्रीतिं च साधुकाव्यनिबन्धनम् ॥

काव्य की यह धारा वैदिक काल से ही निरन्तर प्रवाहित हो रही है। वेदों की ऋचाएँ इस धारा का आदिम स्त्रोत है।

लौकिक संस्कृत भाषा में काव्य रचना का आरंभ वाल्मीकि से हुआ। वाल्मीकि को मधुर उक्तियों का मार्गदर्शी महर्षि कहा गया है। विषय का अलंकृत वर्णन, सरल एवं मनोरम पदों से आकर्षक अर्थों की अभिव्यक्ति की रीति वाल्मीकि

ने ही दिखाई। इन्हीं का अनुसरण करते हुए अनेक कवियों ने इस महाकाव्य की परम्परा को आगे बढ़ाया।

संस्कृत महाकाव्यों के विकास क्रम में क्रमशः कालिदास, अश्वघोष, भारवि आदि का नाम मुख्य रुप से लिया जाता है। कालिदास ने अपने दो महाकाव्यों (कुमारसम्भव तथा रघुवंश) में वाल्मीकि की शैली को स्वीकारा है। इन्हीं का अनुसरण करते हुए प्रो. अभिराज राजेंद्र मिश्र ने अपने महाकाव्यों (जानकीजीवनम्, वामनावतारणम्) की रचना की। भगवान कृष्णद्वैपायन द्वारा प्रणित भागवत पुराण ही इस महाकाव्य का उपजीव्य है-

कवि (प्रो. अभिराज राजेंद्र मिश्र) का व्यामोह कविता कामिनी का आदर्शभूत कवि कालिदास से हैं। कविवर राजेंद्र मिश्र ने महाकवि कालिदास की स्तुति करते हुए कहा कि-

कविकुलगुरूकल्पं कालीदासं समीडे,

कृत जलधरगतं गीतवशं रघूणां।

तदनु च भवभूर्ति भारविं वाणहर्षी,

समधिकविनयेन प्रार्थये भट्टिमाघौ।

संस्कृत साहित्य का वर्गीकरण-

अभिराज राजेंद्र मिश्र अपने अभिनव काव्यशास्त्रीय ग्रंथ में काव्य का लक्षण कुछ इस प्रकार करते हैं-

काव्यं रसात्मकं चेद शव्दार्थकलेवरम् ।

भिद्यते खलु निर्मित्या रुचिरूप प्रभेदतः ।।

(अभिराजयशोभूषणम्)

तदनन्तर प्राचीन शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण करते हुए काव्य के भेदों का निरूपण करते हुए वै कहते हैं कि दृश्य और श्रव्य के भेद से काव्य दो प्रकार के होते हैं-

दृश्यश्रव्यप्रकाराभ्यामादौ काव्यं द्विधा मतम् ।

रुपरुपकनाट्यानि दृश्यनामान्तराणि च ।।

(अभिराजयशोभूषणम)

काव्य के भेद कुछ इस प्रकार से भी किए गए हैं-

1. स्वरूप के अनुसार काव्य के भेद
2. शैली के अनुसार काव्य के भेद

1. स्वरूप के अनुसार काव्य के भेद –

स्वरुप के आधार पर काव्य के दो भेद हैं- **श्रव्य काव्य एवं दृश्य काव्य।**

(1) श्रव्य काव्य

जिस काव्य का रसास्वादन दूसरे से सुनकर या स्वयं पढ़ कर किया जाता है, उसे श्रव्य काव्य कहते हैं। जैसे-रामायण और महाभारत।

श्रव्य काव्य के भी दो भेद होते हैं- **प्रबन्ध काव्य तथा मुक्तक काव्य ।**

प्रबंध काव्य

इसमें कोई प्रमुख कथा काव्य के आदि से अंत तक क्रमबद्ध रूप में चलती है। कथा का क्रम बीच में कहीं नहीं टूटता और गौण कथाएँ बीच-बीच में सहायक बन कर आती हैं। जैसे-रामचरित मानस ।

प्रबंध काव्य के दो भेद होते हैं - **महाकाव्य एवं खण्डकाव्य।**

1. महाकाव्य - इसमें किसी ऐतिहासिक या पौराणिक महापुरुष की संपूर्णजीवन कथा का आद्योपांत वर्णन होता है।

2. खंडकाव्य - इसमें किसी की संपूर्ण जीवनकथा का वर्णन न होकर केवल जीवन के किसी एक ही भाग का वर्णन होता है।

महाकाव्य "महत्" विशेषण सहित "काव्य" शब्द के योग से निर्मित है। महाकाव्य की महत्ता स्वरूपजन्य नहीं है, अपितु गुणजन्य है। कोई भी काव्य अपने वृहदाकार के कारण महाकाव्य की संज्ञा से अभिनिहित नहीं किया जा सकता। बल्कि कवित्त्व बीज संस्कार विशेष कवि प्रतिभा से महाकाव्य का सृजन होता है।

महाकाव्य का लक्षण

महाकाव्य सर्गयुक्त होता है। इसका नायक देव या उत्तम वंशज, धीरोदात्त क्षत्रिय होता है। श्रृंगार, वीर या शान्त तीन रसों में से कोई एक अंगी रस होता है तथा शेष रस अङ्ग होते हैं। धर्म, अर्थ, काम और मोक्षरूप पुरुषार्थ चतुष्टय में से

किसी एक फल की प्राप्ति इसका उद्देश्य होता है। ग्रन्थारम्भ में नमस्कारात्मक, वस्तुनिर्देशात्मक अथवा आशीर्वादात्मक मंगलाचरण किया जाता है। पूरे सर्ग में एक प्रकार के छन्द का प्रयोग होता है तथा सर्ग का अन्त भिन्न प्रकार के छन्द से किया जाता है। किसी-किसी सर्ग में अनेक-विध छन्द भी होते हैं। संध्या, सूर्योदय, पर्वत, ऋतु, स्वर्गादि में से किन्हीं का साङ्गोपाङ्ग वर्णन होता है। कवि इतिवृत्त, नायक या किसी अन्य प्रमुख पात्र के नाम पर महाकाव्य का नाम रखता है और सर्ग में वर्णित कथा के अनुसार प्रत्येक सर्ग का नाम दिया जाता है।

सर्गबन्धो महाकाव्यं तत्रैको नायकः सुरः।

सद्वंशः क्षत्रिया वापि धीरोदात्तगुणान्वितः ।।

श्रृंगारवीरशान्तानामेकोऽङ्गी रस इष्यते।

अङ्गानि सर्वेऽपि रसाः सर्वे नाटकसन्धयः ॥

इतिहासोद्भवं वृत्तमन्यद्वा सज्जनाश्रयम्।

चत्वारस्तस्य वर्गाः स्युस्तेष्वेकं च फलं भवेत् ॥

आदौ नमस्क्रियाशीर्वा वस्तुनिर्देश एव वा।

एकवृत्तमयैः पचौरवसानेऽन्यवृत्तकैः ॥

नातिस्वल्पा नातिदीर्घाः सर्गा अष्टाधिका इह।

नानावृत्तमयः क्वापि सर्गः कश्चन दृश्यते ॥

सर्गान्ते भाविसर्गस्य कथायाः सूचनं भवेत्।

संध्यासूर्येन्दुरजनीप्रदोषध्वान्तवासराः ।

प्रातर्मध्याह्नमृगयाशैलर्तुवनसागराः ॥

मुक्तक काव्य

इसमें केवल एक ही पद या छंद स्वतंत्र रूप से किसी भाव या रस अथवा कथा को प्रकट करने में समर्थ होता है। गीत कवित्त दोहा आदि मुक्तक होते हैं।

(2) दृश्य काव्य

जिस काव्य की आनंदानुभूति अभिनय को देखकर एवं पात्रों से कथोपकथन को सुन कर होती है, उसे दृश्य काव्य कहते हैं। जैसे-नाटक में या चलचित्र में।

2. शैली के अनुसार काव्य के भेद -

क) पद्य काव्य- इसमें किसी कथा का वर्णन काव्य में किया जाता है, जैसे-गीतांजलि।

ख) गद्य काव्य - इसमें किसी कथा का वर्णन गद्य में किया जाता है, जैसे-कादंबरी। गद्य में काव्य रचना करने के लिए कवि को छंद शास्त्र के नियमों से स्वच्छंदता प्राप्त होती है।

ग) चंपू काव्य- इसमें गद्य और पद्म दोनों का समावेश होता है। मैथिलीशरण गुप्त की' यशोधरा चंपू काव्य है। इसमें किसी कथा का वर्णन काव्य में किया जाता है, जैसे-नलचम्पू।

शोध का विषय

जैसा कि मेरे शोध विषय के नाम से ही अवगत हो रहा है कि मै जनकीजीवनम्, वामनावतरणम् महाकाव्यों में प्रयुक्त कृदन्त एवं तद्धित प्रत्ययों का समीक्षात्मक अध्ययन करना चाहती हूँ। इस अध्ययन के अन्तर्गत कृदन्त एवं तद्धित प्रत्ययों का विभिन्न अर्थों में प्रयोग, नियत धातु व प्रतिपादिकों के साथ प्रत्ययों का प्रयोग आदि का विवेचन किया जाएगा।

कृदन्त प्रकरण

<u>उदाहरण</u> **आतश्चोपसर्ग =** उपसर्ग उपपद में रहते आकारान्त धातु से **(कर्ता अर्थ में) क** प्रत्यय होता है । जैसे- **प्रज्ञः** - यहां **प्र** उपसर्गपूर्वक **ज्ञा धातु** से **क** प्रत्यय हुआ है।

गेहे कः = घर अभिधेय होने पर ग्रह धातु से **(कर्ता अर्थ में) क** प्रत्यय होता है। जैसे- **गृहम्।**

उपर्युक्त दोनों ही सूत्रों से एक ही प्रत्यय का विधान किया गया है। किंतु वह (क प्रत्यय) प्रत्यय अलग - अलग सूत्रों से अलग- अलग अर्थों में प्रयुक्त हुआ है। कहीं कहीं यही विकल्प से तो कहीं नित्य प्राप्त होता है और कहीं बहुलता से इसकी प्राप्ति होती है।

तद्धित प्रकरण

उदाहरण **शरीरावयवाच्च** = शरीर के अवयववाचक सप्तम्यन्त समर्थ प्रतिपादिकों से **भव (होने वाला) अर्थ में** तद्धित संज्ञक **यत्** प्रत्यय होता है। जैसे - **दन्ते भवम्।**

शरीराऽवयवाद् यत् = शरीर के अवयववाची चतुर्थ्यन्त प्रातिपदिकों से **हितम् (हितकारी) अर्थ में** तद्धित संज्ञक **यत्** प्रत्यय होता है। जैसे = **दन्त्यम्-** दन्तेभ्यः हितम्। यहाँ भी दोनो सूत्रों से एक ही प्रत्यय का विधानअलग अलग अर्थों में किया गया है।

महाकाव्यों में प्रयुक्त प्रत्यय

कचिच्च तौर्यत्रिककं विभावितं विनोदरथ्यासु नटैः कुशीलवैः ।।

यहाँ **"नटः"** इस पद में **अच् प्रत्यय** का कर्ता अर्थ में प्रयोग किया गया है।

प्रदीप्तजाम्बुनदभित्तिकालये क्वचिच्छविं स्वां समुदीक्षमाणा।

यहाँ **"समुदीक्षमाणा"** इस पद में **सम् उत् उपसर्गपूर्वक ईक्ष दर्शने** धातु से **शानच् प्रत्यय** का विधान किया गया है।

इस प्रकार महाकाव्य के अन्य उदाहरणों को लेकर उनके प्रत्यायों के अर्थों को जानकर एवम् उनका विश्लेषण करके सार रुप में प्रकट करना ही मेरे शोध का विषय है। इस प्रकार कृदन्त एवम् तद्धित प्रत्ययों का इस दृष्टि से सर्वथा नूतन अध्ययन किया जा सकता है। इस अध्ययन से दोनों महाकाव्यों (जनकीजीवनम्, वामनावतरणम्) में प्रत्ययों का नियत धातुओं के प्रति, नियत अर्थों के प्रयोग,

सामान्य रूप से प्रत्ययों का धातुओं के साथ प्रयोग इस प्रकार के कई नवीन विमर्श उद्घाटित किए जा सकते हैं। पाणिनीय अष्टाध्यायी को आधार बनाकर और महर्षि पाणिनि के अन्य उपदेशों को भी ध्यान में रखते हुए इन दोनों महाकाव्यों में आए कृदन्त एवम् तद्धित प्रत्ययों का व्याकरणात्मक दृष्टि से अध्ययन किया जाएगा।

प्रस्तुत शोध विषय में किसी भी अनुसन्धाता के द्वारा कोई भी अनुसन्धान दृष्टिगोचर नहीं होता । अतः प्रस्तुत विषय की नवीनता तथा उपादेयता स्पष्ट ही है।

शोध-उद्देश्य

प्रस्तावित शोध कार्य में प्रो. अभिराज राजेंद्र मिश्र विरचित महाकाव्यों (जनकीजीवनम्, वामनावतरणम्) का व्याकरणात्मक रूप से अध्ययन किया जाएगा।

* कृदन्त और तद्धित प्रत्ययों का सर्वदृष्ट्या व्यापक प्रतिष्ठापन।
* प्रत्ययों के गहन विश्लेषण से अर्थतत्व के गांभीर्य के स्पष्ट ज्ञान से सहायता प्राप्त होगी।
* भाषा के व्यावहारिक धरातल पर प्रत्ययों के प्रायोगिक महत्व का प्रतिपादन।

* प्रस्तुत शोध प्रबंध संस्कृत तथा तत्संबंध प्राकृत, हिंदी, नेपाली, इत्यादि अनेक भाषाओं के औपसर्गिक अध्ययन में महत्वपूर्ण योगदान व भावी शोधार्थी छात्र के लिए आधारभूमि प्रदान करेगा।

शोध के स्त्रोत

* विभिन्न विश्वविद्यालय के पुस्तकालय व पत्रिकाएं।

* सेमिनार, संगोष्ठी व शोध पत्र।

* इंटरनेट के माध्यम से।

शोध प्रविधि

* शोधकार्य की सहायता के लिए तथ्यों का विश्लेषण अत्यावश्यक है।

* अनुसंधान कार्य के लिए विभिन्न प्रकार की शोध प्रविधियों का प्रयोग किया जाता है।

* प्रस्तावित शोधकार्य में मुख्यतया विश्लेषणात्मक, विवेचनात्मक, अन्वेषणात्मक एवम् अनुशीलनात्मक शोध प्रविधि का प्रयोग किया जाएगा।

अध्याय - विभाजन

भूमिका

प्रथम अध्याय : कवि तथा काव्य परिचय

- संस्कृत साहित्य में महाकाव्यों का उद्भव एवं विकास।
- कवि का व्यक्तित्व एवं कृतित्व।
- अभिराजराजेंन्द्र मिश्र के महाकाव्यों का वैशिष्ट्य।

द्वितीय अध्याय : प्रत्ययों का परिचय

- कृत् प्रत्ययों का परिचय।
- तद्धित प्रत्ययों का परिचय।

तृतीय अध्याय : जानकीजीवनम् में कृदन्त प्रकरण

- कृत्यप्रत्यय।
- पूर्व कृदन्त प्रत्यय।
- उणादिप्रत्यय।
- उत्तरकृदन्त प्रत्यय।

चतुर्थ अध्याय : वामनावतरणम् में कृदन्त प्रकरण

- कृत्य प्रत्यय।
- पूर्व कृदन्त प्रत्यय।
- उणादि प्रत्यय।
- उत्तर कृदन्त प्रत्यय।

पंचम अध्याय : जानकीजीवनम् में तद्धित प्रकरण

- ठगधिकार।
- यदधिकार।
- छयतोधिकार।
- ठञधिकार प्रत्यय।
- भावकर्मार्थ प्रत्यय।
- भावनाद्यर्थक प्रत्यय।
- मत्वर्थीय प्रत्यय ।

षष्ठ अध्याय : वामनावतरणम् में तद्धित प्रकरण

- ठगधिकार।
- यदधिकार।
- छयतोधिकार।
- ठञधिकार प्रत्यय।
- भावकर्मार्थ प्रत्यय।
- भावनाद्यर्थक प्रत्यय।
- मत्वर्थीय प्रत्यय।

उपसंहार

उपसंहार

प्रस्तुत शोध प्रबंध के शीर्षक, उपशीर्षक तथा अवान्तर बिंदुओं के निर्देश में आवश्यकता अनुसार संशोधन तथा परिवर्तन किया जा सकता है।

सहायक ग्रंथ सूची

- भागवत पुराण, महर्षि वेदव्यास, गीताप्रेस, गोरखपुर 2. विष्णुपुराण, आचार्य श्री रामानुज शर्मा, चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी
- अभिनव रस मीमांसा (संस्कृत), डॉ. ब्रह्मानन्द शर्मा, चौखम्बा संस्कृत, वाराणसी
- किरातार्जुनीयम, डॉ. सच्यु मिश्रा, नाग पब्लिशर्स, दिल्लीऽ. कुमारसंभवम्, मल्लिनाथ कृत, नाग पब्लिशर्स, दिल्ली
- 17 वीं सदी के संस्कृत महाकाव्य, डॉ. रामलखन पाण्डे नागपब्लिशर्स, दिल्ली
- नैषध समीक्षा, डॉ. देवनारायण झा, नाग पब्लिशर्स, दिल्ली 8. अलंकार सर्वस्व, रामचन्द्र द्विवेदी, मोतीलाल बनारसीदास, पटना
- काव्यप्रकाश, डॉ. ज्योत्सना मोहन नाग पब्लिशर्स, दिल्ली 10. भर्तृहरिशतकम, गोपीनाथ, बहियसस्कृत संस्थान, दिल्ली

- जानकीजीवनम् राजेन्द्र मिश्र, प्रकाशन वर्ष 1988 ई०, प्रकाशक, वैजयन्त प्रकाशनम् 8. बाघम्बरीमार्ग, इलाहाबाद।
- रामायणः महर्षि बाल्मीकि, सं. 2066 प्रकाशक, गीता प्रेस, गोरखपुर
- उत्तररामचरितम् भवभूति प्रकाशक, रामनारायण लाल विजय कुमार, 2 कटरा रोड इलाहाबाद 211002
- सीता चरितम् : रेवा प्रसाद द्विवेदी, प्रकाशन वर्ष 1990 ई० प्रकाशक, कालिदास संस्थानम् 28, महामनः पुरी, वाराणसी-221005
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् : कालिदास प्रकाशक, रामनारायण लाल विजय कुमार, 2 कटरा रोड इलाहाबाद-211002
- पाणिनीय - अष्टाध्यायी
- महाभाष्य डॉ० जयशंकरलाल त्रिपाठी, चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी, 2019
- काशिकावृत्ति टीकासहित डॉ० जयशंकरलाल त्रिपाठी, तारा प्रिन्टिंग वर्कर्स, 1986
- वैयाकरण-सिद्धान्तकौमुदी डॉ० रामविलास चौधरी, मोतीलाल बनारसीदास, 1993

- शिशुपालवध डॉ० केशवराव मुसलगाँवकर, चौखम्बा संस्कृत भवन, वि० सं० 2069
- वाक्यपदीयम् डॉ० शिवशंकर अवस्थी, चौखम्बा विद्याभवन, 2006
- माधवीय-धातुवृत्ति आचार्य विजयपाल, रामलाल कपूर ट्रस्ट, 2009
- उपसर्गार्थचन्द्रिका चारुदेव शास्त्री, भारतीय विद्या प्रकाशन, 1970